



राहुल सांकृत्यायन की कहानियों में शिल्प विधान

संजय कुमार

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश

राहुल सांकृत्यायन की कहानियाँ कथ्य प्रधान हैं। क्योंकि राहुल सांकृत्यायन इतिहास सम्बंधित शोधों में ज्यादा रुचि लेते थे इसीलिए वे कहानियों के माध्यम से ऐतिहासिक तथ्य को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। कहानी में यद्यपि शिल्प सम्बंधित त्रुटियाँ हैं तथापि भाव एवं कथ्य उत्तम है। कुछ कहानियों में भूमिका आवश्यकता से कुछ ज्यादा ही लम्बी हो गयी है तथा कहीं कहीं कहानियों को समाप्त करने के बजाए अनावश्यक विस्तार दे दिए हैं फिर भी कहानीकार ने अपने अपार ऐतिहासिक ज्ञान को पाठकों तक हस्तांतरण करने की कोशिश किया है जो सराहनीय हैं।

मुख्य शब्द: राहुल सांकृत्यायन, शिल्प विधान, ऐतिहासिक

प्रस्तावना

राहुल सांकृत्यायन मूल रूप से विद्योव्ययसनी, विद्योपार्जन वाले व्यक्ति थे ज्ञान जहाँ से भी और जिस हद में जाकर प्राप्त हो सके प्राप्त कर के ही रहते थे इस प्रकार की सम्भावनाएँ उन्हें जहाँ-जहाँ दिखी वहाँ लाख कठिनाइयों के पश्चात् पहुँच ही गये। यद्यपि राहुल सांकृत्यायन की औपचारिक शिक्षा व्यवस्थित ढंग से नहीं हो सका परंतु अनौपचारिक ढंग से सदैव ज्ञान प्राप्त करते रहे। राहुल सांकृत्यायन संसार भ्रमण के द्वारा प्राप्त ज्ञान को स्वयं तक ही सिमित नहीं रखना चाहते थे यह जानते हुए कि आधिकाधिक लोगों को इसमें रूची नहीं है। तथापि उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों तक अपनी इतिहास से संबंधित जानकारियाँ सम्प्रेषित किया है अतः उन्होंने हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओं के माध्यम से इसे व्यक्त करने की कोशिश किया है। इनकी कहानियाँ भी उनके इन्हीं विचारों का वाहक है।

राहुल जी ने सम्पूर्ण एशिया के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण देशों का ऐतिहासिक भ्रमण किया था। अतः हिन्दी के कथित इतिहासकारों से उनके पास विश्व इतिहास की अच्छी एवं प्रयोगिक समझ थी। 'वोल्गा से गंगा' एवं 'कनैला की कथा' कहानी संग्रह में उन्होंने अपनी सर्वज्ञता का परिपक्व प्रयोग किया है। उन्होंने 'कनैला की कथा' को न केवल अपने जन्मस्थल कनैला तक सीमित रखा है। बल्कि इसे विश्व इतिहास के विकास से वैज्ञानिक ढंग से जोड़ा भी है। 'वोल्गा से गंगा' कृति की आरंभिक सभी कहानियाँ इतिहास के विकास से जुड़ी हुई हैं। वह भी प्राक् इतिहास से जिस काल के संबंध में कोई साक्ष्य नहीं है। जिसे इतिहासकार अन्धा युग की संज्ञा से विभूषित करते हैं। उस काल की कहानी राहुल सांकृत्यायन बड़े ही मनोरंजक ढंग से लिखते हैं। आरम्भ 'निषा' कहानी से होती है। इस कहानी का मूल उद्देश्य ही है पाठक को मनोरंजक ढंग से अन्धायुग के बारे में जानकारी प्रदान करना है। राहुल अच्छी ढंग से जानते हैं कि प्राक् इतिहास को केवल व्याख्या करके नहीं समझा जा सकता है। बल्कि उस युग की संभावित घटनाओं को कल्पना करके ही व्याख्यायित किया जा सकता है। वह भी कोरी कल्पना नहीं होनी चाहिए। बल्कि ऐतिहासिक सच के आस-पास जरूर होना चाहिए।

अतः यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि राहुल सांकृत्यायन इन कहानियों के माध्यम से अपनी सर्वज्ञता का प्रदर्शन किया है। भारतीय

स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी हुई कहानियाँ उनकी सर्वज्ञता को और भी प्रामाणिक बना देती हैं।

कहानी की सर्वग्राह्यता एवं प्रभावोत्पादकतापूर्ण बनाने हेतु उचित भाषाशैली का होना अत्यंत आवश्यक है। राहुल सांकृत्यायन कहानीकार कम तथा इतिहासबक्ता ज्यादा थे फिर भी हम उनकी कहानियों की भाषा शैली के अन्तर्गत सर्वग्राह्यता, वाक्य प्रवाह, भाषा की प्राजलता, मुहावरों, प्रतीक एवं संवाद शैली पर समुचित विवेचना प्रस्तुत करेंगे। राहुल सांकृत्यायन अपनी कहानी को प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में प्रवाहित किया है। 'वोल्गा से गंगा' कहानी संग्रह की कहानियाँ, निषा, दिवा, अमृताष्व, प्रभा, नागदत्त आदि का विकास इस प्रकार हुआ है मानों कहानीकार किसी दूर ऐसे स्थान पर बैठे हैं जहाँ से पूरी कहानी देखकर श्रोताओं को आँखों देखा हाल सुना रहे हो। वही कनौल की कथा कहानी-संग्रह की 'डीह बाबा' कहानी को कहानीकार कहानी में प्रवेश कर कहानी को बढ़ाते हैं। 'सत्तमी के बच्चे' कहानी संग्रह की कहानियाँ राहुल जी जीवनवृत्तान्त की तरह सुनाते हैं। परन्तु इन सब में खास बात यह है कि राहुल अपनी भाषा का विकास अपनी जैसी ही स्वरूप प्रदान करते हैं। उन्होंने सीधी-सादी एवं सरल वाक्य का सर्वाधिक प्रयोग में किया है।

उदहारण के लिए 'वोल्गा से गंगा' कहानी संग्रह के 'निषा' कहानी की कुछ पंक्तियों को लेते हैं।

“दोपहर का समय है, आज कितने दिनों बाद सूर्य का दर्शन हुआ। यद्यपि इस पाँच घंटे के दिन में उसके तेज में वीक्षणता नहीं है तो भी बादल, बर्फ, कुहरे और झंझा से रहित इस समय चारों ओर फैलती सूर्य की किरणें देखने में मनोहर और स्पर्श से मन में आनन्द का संचार होता है।”

प्रस्तुत उदहारण में सरल वाक्यों का ही अधिकता है। राहुल ने अपनी तमाम कहानियों में इसी प्रकार सरल वाक्यों का ही प्रयोग किया है। ताकि सामान्य पाठक भी इस कहानी को पढ़ सके। ऐसा नहीं है कि राहुल सांकृत्यायन मिश्रित और संयुक्त वाक्य नहीं लिख सकते। उनका 'दर्शन-दिग्दर्शन' दुरुह वाक्यों से भरा पड़ा है। कोई भी व्यक्ति 'दर्शन-दिग्दर्शन' पढ़ने के बाद यदि उनकी कहानियों को पढ़ेंगे तो उन्हें स्वयं आभास हो जाएगा कि राहुल जी ने अपनी कहानियों को

सप्रयत्न सामान्य पाठक की समझ प्रस्तुत करने हेतु सरल बनाने की कोशिश की है।

अतः राहुल जी बौद्ध शब्दावली, संस्कृत निष्ठ शब्दावलीयों के प्रकाण्ड विद्वान थे उनकी कृतियों में प्रायः इन शब्दों का प्रयोग भी है। जो सामान्य पाठक के सर के ऊपर से निकल जाता है। परन्तु अपनी कहानियों से उन्होंने आसान तद्भव शब्दों का प्रयोग प्रमुखता से किया है। राहुल की कहानियों में संक्षिप्तता का घोर अभाव है। उनकी कहानियों में प्रायः लम्बी भूमिका होती है जिससे पाठक की रूचि कहानी प्रवेश से पूर्व ही समाप्त होने लगती है। उदाहरण के लिए कनैला की कथा की 'डीह बाबा', 'सतमी के बच्चे की', 'पुजारी' अथवा वोल्गा से गंगा कहानी संग्रह की 'दिवा' और 'सुदास' कहानियों को देखा जा सकता है।

इतना ही नहीं राहुल सांस्कृत्यायन की कुछ कहानियों की सामाप्ति को इतना बढ़ा दिया गया है। जिससे कहानी अनावश्यक विस्तार से ग्रसित हो मूल्यहीनता की ओर अग्रसर हो गया है। उदाहरण के लिए 'सतमी के बच्चे' कहानी संग्रह की 'डीह बाबा' कहानी तेरह पृष्ठ की है। जिसमें सात पृष्ठ कनैला गाँव की विकास यात्रा ही है। राहुल की यही विस्तारिता उनकी कहानियों की संक्षिप्तता विरोधी बना देता है। अधिकाधिक सरल वाक्यों का प्रयोग राहुल की कहानियों को जहाँ प्रवाहपूर्ण बनाता है। वहीं इतिहास एवं प्रकृति, एवं पात्र के चित्रण की अधिकता के कारण प्रवाह अवरुद्ध भी होती दिख रही है। यदि राहुल सांस्कृत्यायन भूमिका और उद्देश्य की स्पष्टिकरण से बच जाते तो उनकी कहानी प्रवाह पूर्व आवश्य होती।

राहुल सांस्कृत्यायन, प्रेमचन्द और फणिसरनाथ रेणु की भाँति विषुद्ध कहानीकार नहीं थे वे अपनी मन की कथ्य को किसी प्रकार अभिव्यक्त कर देना चाहते थे अतः उनकी भाषाओं में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग नहीं के बराबर ही है। राहुल सांस्कृत्यायन को संवाद-शैली में सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई है। उनकी संवाद-शैली गतिमान एवं प्रयाप्त नाटकीय है।

'शिल्प' का अर्थ होता है 'बनावट'। कहानी में घटनाक्रम को किस प्रकार रखा जाए कि उसकी पठनीयता बनी रहे। 'शिल्प' शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता है। राहुलजी की कहानियों के कथा-सूत्र एवं उनके विप्लेषण पर दृष्टिपात करने से अनेक निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। कहानी में कथा का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी में मनोविप्लेषण के महत्व बढ़ जाने पर भी कथा की स्थिति पूर्ववत है। राहुल जी की कहानियों के विप्लेषण से ज्ञात होता है कि उनमें निश्चित एवं क्रमबद्ध कथानक का अभाव है। अन्य तत्वों द्वारा उनकी सृष्टि हुई है।

कथा-शिल्प की दृष्टि से कहानी की घटनाएँ परस्पर सम्बद्ध होनी चाहिए किन्तु राहुल जी की कहानियों की घटनाएँ परस्पर सम्बद्ध नहीं हैं। पात्रों के चरित्र को विकसित करने के लिए अनेक घटनाओं एवं प्रसंगों का उनकी कहानियों में समावेश किया गया है। कथा-प्रवाह को रोककर राहुल जी पात्रों के विभिन्न गुणों की पुष्टि करने में उनके जीवन की अन्य घटनाओं का वर्णन करने में लगाते हैं। उदाहरणस्वरूप, कुमार दुरंजय (बहुरंगी मधुपुरी) को कुत्ते पालने का व्यसन है। उसकी इस प्रवृत्ति से सम्बद्ध प्रसंग का तीन पृष्ठों में उल्लेख किया गया है। पुजारी (सतमी के बच्चे) की धार्मिक उदारता विषयक विशेषता के समर्थन में उसके चिनगी चमार के दाह-संस्कार में सम्मिलित होने से सम्बद्ध प्रसंग का कहानी में समावेश किया गया है।² ऐसे प्रसंग राहुल जी की कहानियों के सहज प्रवाह में बाधक सिद्ध हुए हैं।

शिल्प की दृष्टि से कहानी विधा का कथानक आरम्भ होकर प्रायः किसी न किसी प्रकार के संघर्ष द्वारा क्रमशः उत्थान को प्राप्त होता 'चरम' अथवा तीव्रतम स्थिति को पहुँचता है। वहाँ कुतूहल अपनी चरम सीमा को पहुँच जाता है। इसके पश्चात कहानी का परिणाम या अन्त आता है, जिसमें पूरे तथ्य का उद्घाटन हो जाता है। चरम अर्थात् तीव्रतम स्थिति परिणाम को अधिक महत्वपूर्ण बना देती है। राहुल जी की

कहानियों में नाटकीयता का अभाव है। कथानक में आरम्भ, विकास, चरम, रहस्योद्घाटन जैसी स्थिति नहीं है। उदाहरण स्वरूप, ठाकुर जी (बहुरंगी मधुपुरी) नामक कहानी में किसी समस्या का आरम्भ, विकास, चरम तथा रहस्योद्घाटन नहीं है। एक राजा को अपनी पुत्री से अत्यधिक स्नेह है। वह अपनी पुत्री के लिए उसके घर के सामने ठाकुर जी का मंदिर बनवाता है। कथानक में इस विषय का विस्तार मात्र है। 'स्मृतिज्ञान कीर्ति' (सतमी के बच्चे) कहानी में एक भारतीय पण्डित स्मृतिज्ञान कीर्ति की जीवन का झाँकी है। भोट देश में अनेक कष्ट सहता हुआ वह वहाँ की भाषा सीखता है। राहुल जी की अन्य कहानियों के कथानक में संघर्ष तथा चरम स्थिति का अभाव है।

संदर्भ सूची

1. बहुरंगी मधुपुरी – राहुल सांस्कृत्यायन, पृ 33
2. सतमी के बच्चे – राहुल सांस्कृत्यायन, पृ 98